11/05/2020

General Psychology [Paper - I, B.A. I (Hons.)]

And

Educational Psychology [Paper - III, B.A. II (Hons.)]

Role of Motivation in Learning

सीखने में अभिप्रेरण का महत्त्व

मनोवैज्ञानिकों का मत है की सीखने का प्रकार चाहे मानव-सीखना (human learning) हो या पशु-सीखना (animal learning) हो, इसमें अभिप्रेरण (motivation) का अपना एक विशेष महत्त्व है। अभिप्रेरण से तात्पर्य प्राणी की ऐसी आंतरिक अवस्था से होता है जो उसे एक खास दिशा में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। ज़ाहिर है की इस ढंग की प्रेरणा मिलने से मनुष्य हो या पशु दोनों ही उत्तम ढंग से किसी कार्य या व्यवहार को सीखेंगे। अतः हम पशु-सीखना तथा मानव-सीखना दोनों में अभिप्रेरण के महत्त्व का अलग-अलग अनुच्छेदों में वर्णन करेंगे।

पशु-सीखना में अभिप्रेरण की भूमिका (Role of Motivation in Animal Learning)

सीखने के क्षेत्र में अनेक अध्ययन विभिन्न पशुओं पर किये गए हैं जिनसे यह स्पष्ट हुआ है की पशु-सीखना में अभिप्रेरण का महत्त्व है। इन अध्ययनों से जब पशु में तीव्र अभिप्रेरण होता है तो वह किसी अनुक्रिया को जल्द सीख लेता है। इस तथ्य के समर्थन में एक महत्वपूर्ण प्रयोग का वर्णन किया जा रहा है। **Tolman** तथा **Honzik** ने एक प्रयोग किया जिसमें चूहों का तीन समूह लिया गया। पहला समूह ऐसा था जो भूखा नहीं था तथा भूल भुलैया के प्रारम्भ बिंदु से दौड़ लगाते हुए लक्ष्य बॉक्स तक पहुँचने पर उसे पुनर्बलन (reinforcement) नहीं दिया जाता था। चूहों का दूसरा समूह भूखा था परन्तु दौड़ समाप्त होने के बाद लक्ष्य बॉक्स में उसे भोजन नहीं दिया जाता था। तीसरा समूह भूखा था तथा दौड़ समाप्त होने पर उसे लक्ष्य बॉक्स में भोजन दिया जाता था। परिणाम में देखा गया की तीसरे समूह, जो भूखा था, तथा जिसे भोजन भी मिलता था द्वारा अन्य दो समूहों की अपेक्षा भूल भुलैया जल्द सीक लिया गया तथा इस समूह द्वारा सीखने में त्रुटियाँ भी बहुत काम हुयी। प्रयोग के इस परिणाम से यह स्पष्ट हुआ की भूख अभिप्रेरक होने पर चूहों द्वारा भूल भुलैया जल्दी सीख लिया जाता है।

Mackintosh द्वारा भी **Tolman** and **Honzik** के परिणाम की पुष्टि की गयी है। **Mackintosh** ने अपने परिणाम में यह पाया है की जब पशु में दो तरह के अभिप्रेरण (जैसे भूख तथा प्यास दोनों ही) मौजूद रहते हैं तो वह भूल भुलैया को उन पशुओं की तुलना में जल्द सीख लेता है जिनमे दोनों में से कोई एक

ही अभिप्रेरण होता है या कोई भी नहीं होता है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट हो जाता है की पशु-सीखना में अभिप्रेरण का महत्त्व काफी अधिक है।

मानव-सीखना में अभिप्रेरण का महत्त्व (Role of Motivation in Human Learning)

मानव-सीखना में भी अभिप्रेरण का, विशेषकर अर्जित अभिप्रेरण (acquired motives) का महत्त्व अधिक होता है, क्यूंकि पशुओं के सामान मनुष्यों के सीखने का आधार जैविक अभिप्रेरण नहीं होता है। कई ऐसे प्रयोग किये गए हैं जिनके आधार पर यह दिखलाया गया है की मानव-सीखना में अभिप्रेरण का महत्त्व काफी अधिक है। **Hurlock** ने एक प्रयोग किया है जिसमें सीखने की प्रक्रिया पर प्रशंसा तथा निंदा के पढ़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में छात्रों के तीन समूह थे जिन्हे कुछ अंकों को, जो कई कॉलम में लिखे थे, जोड़ना था। यह कार्य कई दिनों तक करना था। छात्रों के एक समूह को जोड़ने का कार्य करते समय काफी प्रशंसा की गयी, दूसरे समूह का कार्य करते समय काफी निंदा की गयी तथा तीसरे समूह को यही कार्य करते समय न तो निंदा की गयी और नाहीं प्रशंसा की गयी। परिणाम में देखा गया की जिस समूह को काफी प्रशंसित किया गया था उसका सीखने का निष्पादन औसतन प्रतिदिन बढ़ता गया। जिस समूह के कार्य की निंदा की गयी थी उसके औसत सीखने का प्राप्तांक प्रारम्भ में तो बढ़ा परन्तु बाद में उसमे तेज़ी से गिरावट आ गयी। परिणाम से यह स्पष्ट हो जाता है की प्रशंसा तथा निंदा जैसे अभिप्रेरणात्मक कारकों का प्रभाव मानव-सीखना पर पड़ता है।

मानव-सीखना पर प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग के पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया गया है। **Deutch** ने एक अध्ययन किया है जिसमें इस तथ्य की पुष्टि की गयी है। इस अध्ययन में दस समूह थे जिनमे से पांच समूह ऐसे थे की यदि ये दिए गए कार्य को मिलजुलकर कर लेते हैं तो उनमे से प्रत्येक को बराबर-बराबर इनाम दिया जायेगा। बाकी पांच समूहों को एक ऐसी परिस्थिति में रखा गया जहां यह कहा गया की दिए गए कार्य को जो व्यक्ति जितनी ही जल्दी एवं ठीक ढंग से कर लेगा उसे उतना ही बड़ा इनाम दिया जायेगा। स्पष्ट है की पहली प्रयोगात्मक परिस्थिति सहयोगिता की थी तथा दूसरी प्रयोगात्मक स्थिति प्रतियोगिता की थी। परिणाम में देखा गया की सहयोग की प्रवृत्तिवाले समूह का निष्पादन प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति रखने वाले समूह के निष्पादन की अपेक्षा अधिक श्रेष्ट था।

परिणाम-ज्ञान (knowledge of result), जो एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरण है, का भी प्रभाव मानव-सीखना पर अधिक पड़ता है। इस सिलसिले में भी कई प्रयोग किये गए हैं। इसमें **Thorndike** द्वारा रेखा खींचने वाली समस्या पर किया गया प्रयोग काफी महत्वपूर्ण है। प्रयोज्यों की आँख पर पट्टी बाँध कर चार इंच की रेखा खींचने के लिए उनसे कहा गया। कुछ प्रयोज्यों को रेखा खींचने के बाद उसे माप कर उसकी लम्बाई बता दी जाती थी अर्थार्थ परिणाम-ज्ञान दे दिया जाता था परन्तु कुछ प्रयोज्यों को रेखा खींचने के बाद उसकी लम्बाई को माप कर परिणाम-ज्ञान नहीं दिया जाता था। प्रयोग के परिणाम में देखा गया की परिणाम ज्ञान देने से रेखा खींचने के कार्य को प्रयोज्यों ने जल्द ही सीख लिए परिणाम ज्ञान नहीं देने से उनके इस कार्य में कोई खास उन्नति नहीं हुयी। स्पष्ट हुआ की परिणाम-ज्ञान से सीखने की प्रक्रिया उन्नत होती है।

मानव-सीखना पर पुरस्कार (reward) तथा दंड (punishment) का भी प्रभाव पड़ता है। **Hilgard** ने एक मशहूर प्रयोग कर के इस तथ्य की सम्पुष्टि की है। इस प्रयोग में दस साल की उम्र के बच्चों के दो समूह लिए गए जो बुद्धि में तुल्य थे। दोनों समूह को निरर्थक पदों की सूची सीखने के लिए दी गयी जिनका कठिनता स्तर सामान था। एक समूह में सीखने के दौरान प्रत्येक प्रयास के बाद उन्हें सिक्का इनाम के रूम में दिया जाता था। दूसरे समूह में सीखने के दौरान प्रत्येक प्रयास के बाद उनसे एक-एक सिक्का वापिस ले लिया जाता था। परिणाम में देखा गया की जिस समूह को सिक्का पुरस्कार के रूप में दिया जाता था उसमे निरर्थक पदों को उस समूह की अपेक्षा, जिसे दण्डित करने के खयाल से एक-एक सिक्का वापिस ले लिया जाता था, सीखने की दर काफी तेज़ थी। स्पष्ट हुआ की पुरस्कार देने से सीखने की प्रक्रिया दंड देने की तुलना में तेज़ी से होती है।

कुछ अध्ययनों में यह भी देखे गया है की जिन व्यक्तियों में उपलब्धि-आवश्यकता (achievement need) अधिक मज़बूत होती है उनमे सीखने की दर तीव्र होती है। **Atkinson** तथा उनके सहयोगियों ने अपने अध्य्यन के आधार पर यह बताया है की जिन व्यक्तियों में उपलब्धि-आवश्यकता अधिक ऊँची होती है उनका निष्पादन सीखने के दोनों तरह के क्षेत्रों में अर्थार्थ साधारण सीखना तथा कठिन सीखना के क्षेत्रों में अधिक श्रेष्ट होता है। जिन व्यक्तियों में उपलब्धि-आवश्यकता साधारण होती है उनका निष्पादन कठिन एवं जटिल सीखना के क्षेत्र में उतना श्रेष्ट नहीं होता है।

<u>निष्कर्षतः</u> - यह कहा जा सकता है की सीखना के क्षेत्र में अभिप्रेरण का महत्त्व काफी अधिक है। चाहे मानव-सीखना हो या पशु-सीखना हो, अभिप्रेरण से वह काफी अधिक प्रभावित होता है।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com